IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, March 2026
Impact Factor: 8.2

चित्रकूट के सोमनाथ मंदिर की खण्डहित सूर्य प्रतिमा में भारतीय संस्कृति और कला का पौराणिक विमर्श

उत्कर्ष शुक्ला

चित्रकूट, उ०प्र०, भारत

डॉ० सचिव गौतम

सहायक आचार्य, देव भूमि उत्तराखण्ड विश्वविध्यालय, देहरादून, उत्तराखण्ड, भारत

utkarshs692@gmail.com

सारांश

भारतीय मूर्तिकला की परंपरा अत्यंत समृद्ध एवं प्राचीन है, जिसकी नींव सिंधु घाटी सभ्यता में रखी गई और विकास की यह परंपरा गुप्त काल से होते हुए मध्यकाल तक विस्तृत होती रही। मंदिर वास्तुकला न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र रही है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का भी प्रमुख माध्यम रही है। चित्रकूट स्थित चरग्राम में सोमनाथ मंदिर की खण्डित सूर्य प्रतिमा का विश्लेषण भारतीय संस्कृति, शास्त्रीय मूर्तिकला तथा पौराणिक ग्रंथों के आलोक में करना है। प्रतिमा भूरे बलुआ पत्थर पर उत्कीर्ण है, जिसमें सूर्य देव को समभंग मुद्रा में खड़े दर्शाया गया है। यह प्रतिमा भारतीय शिल्पशास्त्र में उल्लिखित नियमों के अनुरूप है, जैसा कि बृहदसंहिता, विष्णुधर्मोत्तरपुराण एवं अन्य ग्रंथों में वर्णित है। डॉ. बृजभूषण श्रीवास्तव द्वारा प्रतिमा-विज्ञान के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर यह प्रतिमा सूर्य देव की ही मानी जाती है। प्रस्तुत शोध में क्षेत्रीय अवलोकन, ग्रंथीय अध्ययन और तुलनात्मक विश्लेषण की विधियों का प्रयोग किया गया है। यह प्रतिमा न केवल एक कलात्मक धरोहर है, अपितु भारतीय ज्ञान परम्परा और सांस्कृतिक उत्तराधिकार का महत्वपूर्ण प्रतीक भी है। अतः इसका संरक्षण और पुनर्पाठ, भारतीय सांस्कृतिक अध्ययन की दृष्टि से आवश्यक एवं सार्थक है।

मूल शब्द: सूर्य प्रतिमा, भारतीय संस्कृति, चित्रकूट, पौराणिक ग्रन्थ

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-32269

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, March 2026
Impact Factor: 8.2

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान-परंपरा में मंदिर को केवल ईंट और पत्थरों से बनी एक साधारण संरचना नहीं माना जाता, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, आस्था और कला का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। प्राचीन भारतीय चिंतन में मंदिर की रचना को ब्रह्मांडीय व्यवस्था से जोड़ा गया है, जहाँ वास्तुकला,मूर्तिकला और आध्यात्मिक विचार एक साथ दिखाई देते हैं। मंदिर केवल पूजा-अर्चना का स्थान नहीं होते, बल्कि वे समाज के सांस्कृतिक जीवन, कला-सृजन और धार्मिक विश्वासों को भी अभिव्यक्त करते हैं। भारतीय परंपरा में प्रकृति की अनेक शक्तियों को देवत्व प्रदान किया गया है और इन्हीं में सूर्य देव का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। वेदों में सूर्य को समस्त जगत की आत्मा बताया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारतीय समाज में सूर्य की उपासना का विशेष महत्व था। सूर्य को प्रकाश, ऊर्जा, जीवन और समय के प्रतीक के रूप में भी देखा गया है, इसलिए प्राचीन काल से ही सूर्य पूजा भारतीय धार्मिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग रही है। समय के साथ-साथ यह आस्था स्थापत्य कला और मूर्तिकला में भी व्यक्त होने लगी। विशेष रूप से मध्यकालीन भारत में, लगभग सातवीं से चौदहवीं शताब्दी के बीच, सूर्य मंदिरों के निर्माण की एक समृद्ध परंपरा विकसित हुई। इस काल में निर्मितमोढेरा (गुजरात) तथा कोणार्क (ओडिशा) क्षेत्र के अन्य सूर्य मंदिर भारतीय स्थापत्य और शिल्पकला के उत्कृष्ट उदाहरण माने जाते हैं (श्रीवास्तव, 2015)। इसी सांस्कृतिक और कलात्मक परंपरा के संदर्भ में उ०प्र० के चित्रकूट जिले में स्थित चर ग्राम के सोमनाथ मंदिर का भी विशेष महत्व है। चित्रकूट का क्षेत्र प्राचीन काल से ही धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत प्रसिद्ध रहा है और रामायण से जुड़े अनेक प्रसंग इस क्षेत्र की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान को और भी मजबूत बनाते हैं। मध्यकाल में निर्मित चर सोमनाथ मंदिर आज भले ही काफी हद तक खंडित अवस्था में दिखाई देता है, फिर भी यहाँ प्राप्त सूर्य देव की खंडित प्रतिमा उस समय की कला, धार्मिक आस्था और शिल्पकला की उच्च परंपरा को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। यह प्रतिमा न केवल उस काल के कलाकारों के कौशल और सौंदर्यबोध का प्रमाण है, बल्कि यह

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, March 2026 Impact Factor: 8.2

भारतीय संस्कृति की निरंतरता और उसकी समृद्ध कलात्मक धरोहर का भी महत्वपूर्ण प्रतीक मानी जा सकती है (Shukla, Utkarsh&Singh, Prof.Nirupama , 2025)। इसलिए इस प्रतिमा का अध्ययन भारतीय मूर्तिकला, सांस्कृतिक इतिहास और धार्मिक परंपराओं को समझने की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी और महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

चित्रकूट के सोमनाथ मंदिर: भौगोलिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले में कर्वी-मानिकपुर मार्ग पर कर्वी से लगभग 12 किलोमीटर पूर्व स्थित ग्राम 'चर' की सौरठिया पहाड़ी पर, वाल्मीकि नदी के तट पर बना सोमनाथ मंदिर भौगोलिक और ऐतिहासिक दृष्टि से एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थल माना जाता है। स्थानीय लोगो में यह मंदिर चर सोमनाथ के नाम से प्रचलित है।यह क्षेत्र बुंदेलखंड की उस सांस्कृतिक और कलात्मक परंपरा का हिस्सा है जहाँ प्राचीन और मध्यकालीन समय में मंदिर स्थापत्य तथा मूर्तिकला का उल्लेखनीय विकास हुआ था। इसी क्षेत्र में खजुराहो, महोबा और कालिंजर जैसे ऐतिहासिक स्थल स्थित हैं, जो उस समय की उन्नत कला और स्थापत्य के प्रमुख उदाहरण माने जाते हैं। ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार, इस मंदिर के गर्भगृह की दीवार पर एक शिलालेख अंकित है, जिसमें उल्लेख है कि इसका निर्माण 14वीं शताब्दी के अंत में तत्कालीन नरेश राजा कीर्ति सिंह ने करवाया था। माना जाता है कि चर सोमनाथ मंदिर का निर्माण सौराष्ट्र के प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर की प्रेरणा से किया गया था, जिससे इसके धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व का संकेत

चित्र स० 1 गर्भगृह अग्र भाग, सोमनाथ मंदिर, चर ग्राम, चित्रकूट, उ०प्र०, स्त्रोत: स्व-संग्रह

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, March 2026
Impact Factor: 8.2

मिलता है (अग्रवाल ड. र., 2022)। मध्यकाल में चंदेल और बुन्देल शासकों के समय मंदिर निर्माण को विशेष प्रोत्साहन मिला और इस काल में अनेक भव्य मंदिरों का निर्माण हुआ। चर सोमनाथ मंदिर भी उसी स्थापत्य परंपरा का एक महत्वपूर्ण उदाहरण माना जाता है, जो उस समय के

चित्र स० 2सोमनाथ मंदिर, चर ग्राम, चित्रकूट,उ०प्र०, स्रोतः स्व-संग्रह

शासकों की कला-प्रेमिता और स्थानीय शिल्पकारों की कुशलता को दर्शाता है। स्थापत्य की दृष्टि से यह मंदिर नागर शैली पर आधारित था और इसके निर्माण में मुख्य रूप से बलुआ पत्थर का उपयोग किया गया था। पत्थरों पर की गई नक्काशी उस समय की विकसित शिल्पकला और सौंदर्यबोध को प्रकट करती है (Shukla, Utkarsh&Singh, Prof.Nirupama , 2025)। वर्तमान समय में मंदिर का ऊपरी भाग लगभग पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुका है और उसके अवशेष जैसे आमलक, कलश तथा अन्य स्थापत्य भाग मंदिर प्रांगण में इधर-उधर बिखरे हुए दिखाई देते हैं। इसके अतिरिक्त मंदिर परिसर में लगभग एक हजार से अधिक खंडित प्रतिमाएँ और टूटे हुए स्थापत्य अवशेष भी पाए जाते हैं (अग्रवाल ड. र., 2022)। ये अवशेष इस बात के प्रमाण हैं कि यह स्थल कभी एक समृद्ध धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र रहा होगा। इन्हीं अवशेषों के बीच प्राप्त सूर्य देव की खंडित प्रतिमा उस समय की मूर्तिकला परंपरा और धार्मिक आस्था को समझने में एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में देखी जा सकती है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, March 2026
Impact Factor: 8.2

सूर्य प्रतिमा का पौराणिक और शास्त्रीय विमर्श

भारतीय प्रतिमा विज्ञान के व्यापक क्षेत्र में सूर्य देवता की मानवीय आकृति का विकास एक लंबी और क्रमिक प्रक्रिया का परिणाम है। प्रारंभिक काल में सूर्य की उपासना मुख्यतः प्रतीकों के माध्यम से की जाती थी, किंतु समय के साथ यह परंपरा विकसित होती हुई मूर्तिकला के रूप में सामने आई। प्रारंभिक चरण में सूर्य को सीधे मानव रूप में न दर्शाकर प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता था। चक्र, स्वस्तिक तथा अन्य सौर चिह्न उस समय सूर्य की उपासना के प्रमुख प्रतीक माने जाते थे (शुक्ल, 2019)। धीरे-धीरे जब मूर्तिकला और मंदिर स्थापत्य का विकास हुआ, तब इन प्रतीकों के स्थान पर सूर्य देव की मानवरूपी प्रतिमाएँ बनने लगीं। इस परिवर्तन के साथ सूर्य को एक देवता के रूप में स्पष्ट रूप से चित्रित किया जाने लगा, जिनमें उनकी मुद्रा, वेशभूषा और आभूषणों का विशेष महत्व रहा। समय के साथ विभिन्न क्षेत्रों में विकसित स्थानीय कलात्मक परंपराओं ने भी सूर्य प्रतिमा के स्वरूप को प्रभावित किया। इसके अतिरिक्त कुछ विदेशी प्रभावों और सांस्कृतिक संपर्कों का असर भी प्रतिमाओं की शैली और रूपांकन में दिखाई देता है। इसी कारण भारत के विभिन्न भागों में निर्मित सूर्य प्रतिमाओं में कुछ समानताएँ होने के साथ-साथ क्षेत्रीय विशेषताएँ भी देखने को मिलती हैं। भारतीय शिल्पशास्त्र और अन्य प्राचीन ग्रंथों में सूर्य प्रतिमा के स्वरूप, मुद्रा, अलंकरण और अन्य विशेषताओं का विस्तार से उल्लेख किया गया है (श्रीवास्तव, 2015)। इन ग्रंथों में दिए गए नियम और निर्देश प्राचीन शिल्पकारों के लिए मार्गदर्शक का कार्य करते थे, जिनके आधार पर वे प्रतिमाओं का निर्माण करते थे। इस प्रकार सूर्य प्रतिमा का विकास केवल धार्मिक आस्था का परिणाम नहीं था, बल्कि यह भारतीय कला, संस्कृति और शिल्प परंपरा के दीर्घकालिक विकास को भी दर्शाता है। आगे के अध्ययन में इन्हीं शास्त्रीय ग्रंथों के आधार पर सूर्य प्रतिमा के प्रमुख लक्षणों और विशेषताओं को समझने का प्रयास किया जाएगा (मिश्र, 2000)।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, March 2026
Impact Factor: 8.2

बृहत्संहिता के अनुसार: वराहमिहिर के इस महत्वपूर्ण ग्रंथ में सूर्य को 'उदीच्य वेश' (उत्तरी वेशभूषा) में दर्शाने का निर्देश है। उनके हाथ कंधों तक उठे हों और उनमें खिले हुए कमल के पुष्प हों—यह वर्णन सूर्य के दिव्य और जीवनदायी स्वरूप को दर्शाता है (श्रीवास्तव, 2015)।

स्त्रोत: लेखक द्वारा स्वचित्रित

चित्र स० 3सूर्य प्रतिमा, देवकली, बलिया, उ०प्र०,
स्त्रोत: पृष्ठ स०(99)(श्रीवास्तव, 2015)

विष्णुधर्मोत्तर पुराण: इस पुराण में सूर्य का रूप अत्यंत सुंदर, सिंदूर के समान लाल वर्ण और कवच से संरक्षित शरीर वाला बताया गया है। यह वर्णन सूर्य के तेजस्वी और शक्तिशाली स्वरूप को उजागर करता है (श्रीवास्तव, 2015)।

चित्रकूट स्थित सोमनाथ मंदिर की सूर्यप्रतिमा का विश्लेषण

चित्रकूट के चर सोमनाथ मंदिर परिसर से प्राप्तचित्र स० 4 सूर्य देव की खंडित प्रतिमा भूरे बलुआ पत्थर पर निर्मित है, जो बुंदेलखंड क्षेत्र की स्थानीय शिल्प परंपरा को दर्शाती है। प्रतिमा का ध्यानपूर्वक

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, March 2026
Impact Factor: 8.2

अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि इसमें अंकित रूप, मुद्रा और अलंकरण भारतीय प्रतिमा विज्ञान में वर्णित सूर्य प्रतिमाओं के लक्षणों से काफी हद तक मेल खाते हैं। डॉ. बृजभूषण श्रीवास्तव की प्रामाणिक कृति 'प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला' में प्रतिपादित **Error! Reference source not found.** की सूर्य प्रतिमा के शास्त्रीय लक्षणों और स्वरूप के आलोक में जब चर सोमनाथ की इस प्रतिमा का विश्लेषण किया जाता है, तो इसके कलात्मक अवयवविशेषतः समभंग मुद्राऔरपुष्पलताओं का अंकनका प्रतीकात्मक निरूपणउन मानकों के साथ हुबहू सामंजस्य स्थापित करते दिखाई देते हैं (श्रीवास्तव, 2015)।इस आधार पर इसके अवलोकन से ज्ञात होता है कि चर सोमनाथ मंदिर परिसर से प्राप्त यह खंडित प्रतिमा सूर्य देव की ही प्रतिमा है। यद्यपि प्रतिमा पूर्ण खण्डहित अवस्था में है, फिर भी उसके शेष भागों में दिखाई देने वाले रूप और शैली से सूर्य देव के पारंपरिक स्वरूप की पहचान स्पष्ट रूप से की जा सकती है। प्रतिमा में सूर्य देव को सीधे खड़े हुए रूप में दर्शाया गया है, जो देवत्व की गरिमा, स्थिरता और संतुलन को व्यक्त करता है। इस प्रकार यह प्रतिमा भारतीय मूर्तिकला परंपरा और प्रतिमा विज्ञान में वर्णित शास्त्रीय विशेषताओं का एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करती है।

प्रतिमा विज्ञान और कलात्मक विश्लेषण

प्रतिमा के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इसमें सूर्य देव को 'समभंग' मुद्रा में अंकित किया गया है। इस मुद्रा में शरीर का भार दोनों पैरों पर समान रूप से रहता है, जिससे आकृति में संतुलन और स्थिरता का भाव उत्पन्न होता है। भारतीय मूर्तिकला में यह मुद्रा देव प्रतिमाओं की गरिमा और गंभीरता को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होती है (शुक्ल, 2019)। चर सोमनाथ की प्रतिमा में भी यही भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि शिल्पकार ने सूर्य देव के दिव्य और स्थिर स्वरूप को दर्शाने का प्रयास किया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, March 2026
Impact Factor: 8.2

प्रतिमा के अलंकरण और वेशभूषा का अलौकिक सांस्कृतिक सम्मिश्रण

प्रतिमा में सूर्य देव के अलंकरण और वेशभूषा का अंकन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके कानों में कुंडल, गले में हार तथा कमर में करधनी का सूक्ष्म और संतुलित अंकन दिखाई देता है। मस्तक पर अलंकृत मुकुट दर्शाया गया है, जो देवत्व और राजसी गरिमा का प्रतीक है। विशेष रूप से पैरों में बूट जैसे जूतों का अंकन सूर्य प्रतिमाओं की एक विशिष्ट पहचान माना जाता है। यह शैली भारतीय और उत्तर सांस्कृतिक पश्चिमी- के प्रभावोंसम्मिश्रण को दर्शाती है, जो मध्यकालीन मूर्तिकला में देखने को मिलता है (श्रीवास्तव, 2015)।

प्रतिमा के आसपास सहायक आकृतियों का भी अंकन मिलता है, जो इसके धार्मिक और प्रतीकात्मक महत्व को और अधिक स्पष्ट करता है। सूर्य देव के समीप ऊषा और प्रत्युषा का प्रतीकात्मक निरूपण दिखाई देता है, जिन्हें क्रमशः प्रभात और संध्या की देवियों के रूप में जाना जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ लघु आकृतियाँ, जैसे गंधर्व और अप्सराएँ, प्रतिमा के चारों ओर अंकित हैं, जो एक दिव्य वातावरण का आभास कराती हैं। प्रतिमा के पीछे प्रभामंडल का भी संकेत मिलता है, जो सूर्य के तेज और प्रकाश का प्रतीक है। यद्यपि प्रतिमा वर्तमान में खंडित अवस्था में है, फिर भी उसके अवशेष उस समय की कलात्मक कल्पना और धार्मिक प्रतीकों को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते हैं (श्रीवास्तव, 2015)।

मंदिर प्रांगण के 'भग्नावशेष' और वर्तमान स्थिति

चर सोमनाथ मंदिर आज काफी हद तक क्षतिग्रस्त स्थिति में है और इसके परिसर में अनेक खंडित प्रतिमाएँ तथा स्थापत्य के अवशेष बिखरे हुए दिखाई देते हैं। सामान्यतः पौराणिक मान्यताओं के अनुसार खंडित मूर्तियों की पूजा करना उचित नहीं माना जाता, क्योंकि ऐसी प्रतिमाएँ नियमित आराधना के लिए स्वीकार्य नहीं समझी जातीं। फिर भी इस स्थल के प्रति स्थानीय लोगों की गहरी श्रद्धा बनी हुई है। आसपास के गाँवों से लोग यहाँ दर्शन के लिए आते हैं और इन प्रतिमाओं के प्रति सम्मान प्रकट करते हैं। उनके लिए यह स्थान एक पवित्र तीर्थ के रूप

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, March 2026 Impact Factor: 8.2

में माना जाता है, जहाँ प्राचीन देवस्थल की परंपरा आज भी जीवित है **(chitrakoot district administration)**।समय के साथ मंदिर की संरचना भले ही नष्ट हो गई हो, लेकिन यहाँ से जुड़ा धार्मिक विश्वास समाप्त नहीं हुआ है। लोग यहाँ आकर दीप जलाते हैं, अपनी आस्था के पुष्प अर्पित करते हैं और अपने मन की श्रद्धा व्यक्त करते हैं। विशेष रूप से महाशिवरात्रि के अवसर पर इस स्थान पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु एकत्रित होते हैं। उस समय पूरे क्षेत्र में धार्मिक उत्साह का वातावरण दिखाई देता है और कई लोग दूर-दूर से यहाँ दर्शन के लिए पहुँचते हैं।इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि भौतिक रूप से क्षतिग्रस्त होने के बावजूद यह स्थल स्थानीय समाज की आस्था से जुड़ा हुआ है। यह स्थिति भारतीय धार्मिक परंपरा की उस भावना को दर्शाती है जहाँ देवस्थल की पवित्रता केवल संरचना की पूर्णता पर नहीं, बल्कि लोगों के विश्वास और सांस्कृतिक जुड़ाव पर आधारित होती है। इसलिए चर सोमनाथ मंदिर आज भी क्षेत्रीय धार्मिक जीवन का एक महत्वपूर्ण केंद्र बना हुआ है।

निष्कर्ष

चित्रकूट के चर सोमनाथ मंदिर से प्राप्त खंडित सूर्य प्रतिमा भारतीय मूर्तिकला, पौराणिक परंपरा और मध्यकालीन कला के अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जा सकती है। यद्यपि यह प्रतिमा वर्तमान में खण्डहित अवस्था में है, फिर भी इसके रूप, मुद्रा, अलंकरण और शैली से उस समय की शिल्प परंपरा और धार्मिक विचारों की स्पष्ट झलक मिलती है। इस प्रतिमा में सूर्य देव को जिस प्रकार दर्शाया गया है, वह भारतीय प्रतिमा विज्ञान में वर्णित नियमों और परंपराओं से काफी हद तक मेल खाता है। डॉ. ब्रजभूषण श्रीवास्तव की पुस्तक*प्रतिमा विज्ञान*में वर्णित सूर्य प्रतिमाओं के स्वरूप से तुलना करने पर भी यह स्पष्ट होता है कि चर सोमनाथ से प्राप्त यह प्रतिमा उसी शास्त्रीय परंपरा का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है।इस प्रतिमा के अध्ययन से यह भी

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, March 2026
Impact Factor: 8.2

पता चलता है कि मध्यकालीन समय में बुंदेलखंड क्षेत्र में कला और स्थापत्य की एक समृद्ध परंपरा विद्यमान थी। मंदिर परिसर में बिखरी हुई अनेक खंडित प्रतिमाएँ और स्थापत्य अवशेष यह संकेत देते हैं कि यह स्थल कभी एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र रहा होगा। साथ ही, यह भी उल्लेखनीय है कि मंदिर की संरचना और प्रतिमाएँ क्षतिग्रस्त होने के बावजूद स्थानीय लोगों की आस्था आज भी इस स्थान से जुड़ी हुई है और विशेष अवसरों पर यहाँ श्रद्धालुओं का आगमन होता है।इस प्रकार चर सोमनाथ मंदिर की सूर्य प्रतिमा केवल एक प्राचीन प्रतिमा नहीं है, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक परंपरा, धार्मिक विश्वास और शिल्पकला के विकास का एक महत्वपूर्ण प्रमाण प्रस्तुत करती है। इसलिए इस प्रकार की धरोहरों का संरक्षण और उनके ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक महत्व का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी भारतीय कला और संस्कृति की इस समृद्ध परंपरा को समझ सकें और उससे जुड़ सकें।

संदर्भ

- anand, mulk raj, stella kramrisch. (2019). *homage of khajuraho.* bombay: marg publication.
- *Archaeological Survey of India*. (n.d.). Retrieved from https://asi.nic.in/pages/WorldHeritageKhajuraho
- *chitrakoot district administration*. (n.d.). Retrieved from https://chitrakoot.nic.in/chitrakoot_tourism-2/
- Dr. Sanjay Bhandari and Virendra Kumar Paul. (Aug. 2025). Temple Architecture of Himachal Pradesh: A Critical Review of Composite Construction, Regional Styles, and Research Gaps. *Indian Journal of Traditional Knowledge, vol. 24, no. 8* , 717-32.
- dutt, n. (2022). *Stone sculptures distinct approaches in post independence India.* Retrieved 2022, from shodhganga: https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/502815
- *jagran*. (2016, september 23). Retrieved from https://www.jagran.com/uttar-pradesh/chitrakoot-14745498.html

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, March 2026
Impact Factor: 8.2

- *U.P. tourism*. (n.d.). Retrieved from https://sd2.tourism.gov.in/DocumentRepoFiles/InceptionReport/INRa5e9451b-aea3-4c60-9484-bb0b095256f6.pdf
- kramrisch, s. (1946). *the hindu temple.* new delhi: motilal banarsidas.
- kumar, v. (2020). *Crowdfunding for Heritage: Temple Restoration in the Digital Age.* Banglore: TechHeritage Press.
- Lal, k. B. (2015). *Tulsidas ki Janmasthali Chitrakoot.* DELHI: Manoj Publication.
- Lal, S. (2008). *ndian Art and Architecture: Buddhist, Jain and Hindu.* New Delhi: Aryan Books International.
- Michell, G. (1988). *The Hindu Temple: An Introduction to Its Meaning and Forms.* Chicago: University of Chicago Pres.
- mishra, r. (2021). प्रयागराजकेगढ़वाकिलेकीजानेंऐतिहासिकदास्तान, इतिहाससमेटेहुएहैयहकिला, यूंहीनहींपर्यटकोंकोहैलुभाता. *denik jagran* .
- prajapati, s. (2024). *Chitrakoot shilp ek vishleshnatmak addhyayan.* Retrieved 2024, from shodhganga: https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/628722#
- Rangacharya, A. (1966). *Introduction to Bharata's Natyasastra.* Mumbai: Bombay Popular Prakashan.
- S.P. Gupta, S. P. (2020). *Elements of Indian Art Including Temple Architecture, Iconography & Iconomentry.* New Delhi: Indraprstha Museum of Art and Archaeology.
- Shah, B. S. (2009). *translate Shilpashastra Granth: Ksirarnava.* Jodhpur, Rajasthan: Shri Ashapurna Pashvanath Jain Jnan Bhandar.
- Shavnam and Dr. Sanjay Pathania. (2024). Temple and Their Architectural Style in Himachal Pradesh: An Overview. *International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR), vol. 6, no. 3* , 1-14.
- Shukla, Utkarsh & Singh, Prof. Nirupama . (2025). *Chitrakoot ke Bhagnavashesho ka Surveksnatmak Adhyayan: Char Somnath Mandir aur Madfa Durg - 9vi Shatabdi se 14vi Shatabdi.* Kangra, Himachal Pradesh: MFA Thesis, Central University of Himachal Pradesh.

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, March 2026
Impact Factor: 8.2

- Shukla, Utkarsh and Singh, Prof. Nirupama. (2025). पौराणिकग्रंथोंकेआलोकमेंखजुराहो, चरसोमनाथमंदिर (चित्रकूट) मेंउमामहेश्वरीकातुलनात्मकसांस्कृतिकअध्ययन. *Sattya Sandhan, ISSUE 1 , VOL. 1 ,* 152-159.https://www.cuhimachal.ac.in/admin/assets/uploads/journals/papers/paper_20250804095806.pdf
- Singh, R. (New Delhi). *Sacred Spaces: Conservation of Temples in India. 2nd ed.* 2015: Heritage Publications.
- Vikas Singh, D. C. (2022). Historical and Religious Places of Rural Tourism in Chitrakoot Region . *International Journal of Creative Research Thoughts* , 9.
- अग्रवाल, क. ल. (1980). *खजुराहो.*नईदिल्ली : दिमैकलिनकंपनीऑफ़इंडियालिमिटेड .
- अग्रवाल, ड. र. (2022). *विद्यार्थियोंमेंमड़फादुर्गकेप्रतिकेजागरूकताकाअध्ययन.*झाँसी: E-Book संस्करण (बुन्देलखण्डविश्वविद्यालय).https://archive.org/details/kaagaz-20220727-145937436450
- अवस्थी, ड. र. (1967). *खजुराहोकीदेवप्रतिमाये (प्रथमसंस्करण).*आगरा : ओरियंटलपब्लिशिंगहाउस .
- उपाध्याय, व. (1972). *प्राचीनभारतीयस्तूप, गुहाएवंमंदिर.*पटना: बिहारहिंदीग्रन्थअकादमी.
- (अनुवादित(, ड.ग . (2016). *ऋग्वेद.[संस्कृतपाठ]*संस्कृतसाहित्यप्रकाशन.https://archive.org/details/rigveda-hindi-dr-ganga-sahay-sharma/page/n1/mode/1up
- डॉरीताप्रताप) .2020 .(*भारतीयचित्रकलाएवंमूर्तिकलाकाइतिहास.*जयपुर : राजस्थानहिंदीग्रन्थअकादमी.
- मिश्र, इ. (2000). *प्रतिमाविज्ञान.*भोपाल, म०प्र०: हिंदीग्रन्थअकादमी.
- राधाकृष्णन, ए. (1948). *The Bhagavadgita.* HarperCollins Publishers.

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, March 2026
Impact Factor: 8.2

- Directorate of Census, O. L. (2011). *भारतकीजनगणना.* Retrieved 2011, from censusindia: https://censusindia.gov.in/census.website/
- वासुदेवशरणअग्रवाल) .1987 .(*भारतीयकला.* वाराणसी : विश्वविध्यालयप्रकाशन.
- *विष्णुधर्मोत्तरपुराण [संस्कृतपाठ] प्रथमखण्ड, अध्याय 43.* (अज्ञात). Delhi: मोतीलालबनारसीदास.https://archive.org/details/9000000004657SriVishnuDharmottaraMahapuranam1000pSANSKRIT1929/mode/1up
- शुक्ल, ड. स. (2019). प्रतिमाविज्ञानमेंसूर्य. *International Journal of Multidisciplinary Education and Research* , 31-32.https://multieducationjournal.com/assets/archives/2019/vol4issue3/4-3-13-464.pdf
- श्रीवास्तव, ड. ब. (2015). *प्राचीनभारतीयप्रतिमाविज्ञानएवंमूर्तिकला* .वाराणसी : विश्वविद्यालयप्रकाशन .